एक हाथ सूरत महंमद की, दूजे दो हाथ सूरत दोए।
ए तीनों कही हाथ से, ए दोए तीन एक सोए।। ११० ।।

खुदा ने एक हाथ से रसूल मुहम्मद को बनाया। दूसरे दोनों हाथ से मलकी और हकी सूरत को बनाया। यह तीनों बसरी, मलकी और हकी को खुदा ने अपने हाथ से बनाया है (ऐसा कुरान के तीसरे सिपारे तिलकर रसूल में आया है)। अब यह दोनों सूरत बसरी, मलकी, तीसरी सूरत हकी में आकर मिल गईं और एकाकार हो गईं।

कोई कहे कहां कह्या हाथ से, देखो सिपारे तेईसमें।
देखो सहूर कर मोमिनों, कह्या आदम पैदा हाथ से।। १११ ।।

कोई पूछे कि यह खुदा ने हाथ से बनाया है, ऐसा कहां लिखा है। मोमिनो! इसे कुरान के तेईसवें सिपारे में विचार करके देखो, जहां आदम के पुतले को हाथ से बनाने का आदेश अजाजील को दिया।

महामत कहे हक इलमें, बेवरा कह्या नेक ए।
दो गिरो पोहोंचाई दोऊ असों में, औरों पट खोले भिस्त आठों के।। ११२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से मैंने थोड़ा सा यह विवरण कहा है। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि को परमधाम और अक्षरधाम में जाने के लिए दरवाजे खोल दिए। बाकी सब जीवों के लिए आठ किस्म की बहिश्तें कायम कर दी हैं।

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ३६७ ॥

बाब तीनों फरिस्तों का बयान

तीनों फरिस्तों का बेवरा, लिख्या बीच कुरान।
सो खोल हकीकत मारफत, हादी मोमिन देवें पेहेचान।। १ ।।

कुरान के अन्दर तीन बड़े फरिश्तों का विवरण लिखा है। हादी श्री प्राणनाथ जी महाराज मोमिनों के वास्ते हकीकत और मारफत के भेद खोलकर बता रहे हैं।

बयान बड़े बोहोत निसान, ताथें जुदे जुदे लिखे जात।
एक दूजे के आगे जो कहिए, तो कागद में न समात।। २ ।।

इन तीन फरिश्तों की हकीकत बहुत ज्यादा है। यह अलग-अलग ठिकानों में कही गई है। जिनका एक-दूसरे के साथ मीजान (जोड़) करके विवरण किया जाए तो कागज में लिखा नहीं जाएगा।

जुदी जुदी सनंधों साहेदी, हकें भेजी कई किताब।
जासों पढ़ा या अनपढ़ा, सब रोसन होए सिताब।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज ने कई धर्मशास्त्र अलग-अलग हकीकत की गवाहियों के वास्ते भेजे हैं। जिससे पढ़े हों या अनपढ़े, दोनों को जल्दी से जानकारी मिल जाए।

छिपाया देखाऊं जाहेर कर, जो हकें फुरमाए।
त्यों देखाऊं कर माएने, ज्यों छोटे बड़े समझी जाए।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने कुरान के जो भेद छिपाकर रखे हैं, उनको मैं जाहिर करती हूं। उनका निरूपण (स्पष्ट, प्रकाश) कर ऐसा जाहिर करूंगी, जिससे सब छोटे-बड़ों को समझ में आ जाए।

Nijanand App

हलाल हराम दोऊ छिपे हुते, सो बयान किए हुकम।
ले अकल असराफील, नबी कदमों धरे कदम।।५।।

दुनियां में नेकचलन और बदचलन वाले मिल गए थे। उनको जुदा-जुदा करने के लिए श्री राजजी महाराज के हुकम से असराफील फरिश्ता श्री राजजी की जागृत बुद्धि लेकर आया तथा नेकचलन और बदचलन का भेद बताया। श्री प्राणनाथजी के चलाए रास्ते पर चला।

हक साथ मैं आऊंगा, असराफील ईसा इमाम।
लिखे फैल सबन के, जासों पेहेचानिए तमाम।।६।।

मुहम्मद साहब ने कुरान में कहा है कि आखिरत के वक्त में मैं खुदा के साथ आऊंगा। मेरे साथ असराफील, ईसा रूह अल्लाह और इमाम मेंहेंदी होंगे। जिससे इनकी पहचान हो सके, वह सब तरीका भी लिखा है।

यों केती कहूं निसानियां, हैं हिसाब बिन।
पर ए मीठा लगसी मोमिनों, औरों लगसी सखत सुकन।।७।।

इस तरह से कितने हिसाब बताऊं जो कुरान में लिखे हैं। यह वाणी मोमिनों को प्यारी लगेगी और सबको कठोर वचन लगेंगे।

ए कह्या आयतों हदीसों, जिन सिर आखिरी खिताब।
जाहेर देखावें दिन कर, खोल माएने मगज किताब।।८।।

आयतों, हदीसों में कहा है कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज को यह रहस्य खोलने का अधिकार है। वही इस कुरान के भेदों को खोलकर सबके अज्ञान को मिटाकर दिन जैसा उजाला कर देंगे।

यों दिन बका जाहेर हुआ, तब देखसी सब निसान।
नजरों आवसी कयामत, होसी रोसन सबों पेहेचान।।९।।

इस तरह से अखण्ड ज्ञान जाहिर होने पर सब कुरान के निशानों की पहचान हो जाएगी और सभी कयामत को देखने लगेंगे। सबको संसार की कायमी समझ आने लगेगी।

कहे बिगर ना रेहे सकों, जो हक हादी फुरमाए।
हक बका के असों के, पट महंमद मसी खोलाए।।१०।।

श्री श्यामाजी ने मूल-मिलावा में जो वायदे किए थे, श्री महामतिजी कहते हैं, मैं उनको कहे बिना नहीं रह सकती। श्री राजजी महाराज के अखण्ड घरों अक्षरधाम और परमधाम के परदे आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी और श्री श्यामा महारानी ने खोल दिए हैं।

ए इसारतें कोई न समझया, ना तो जाहेर दई बताए।
कह्या गुनाह किया अजाजीलें, सो सब दिलों करी खताए।।११।।

कुरान में लिखा है कि अजाजील ने गुनाह किया, इसलिए दुनियां के सब जीवों के दिलों पर गुनाह लगा। इन इशारतों को कोई नहीं समझता था, जबकि यह बात बता दी गई कि अजाजील सबके दिलों पर बैठा है।

Nijanand App

अव्वल आए कही महंमदें, कह्या आगूं होसी बड़े निसान।
सो भी वास्ते रूह मोमिनों, देख के ल्यावें ईमान।। १२ ।।

मुहम्मद साहब ने पहले से ही आकर कहा कि आगे कयामत के बड़े-बड़े निशान जाहिर होंगे। वह भी रूह मोमिनों के वास्ते ताकि वह देखकर ईमान ला सकें।

जबराईल साथ रसूल के, आया बीच अव्वल।
कुरान ल्याया बीच रात के, चलाया सरा अमल।। १३ ।।

रसूल साहब के साथ सबसे पहले जबराईल फरिश्ता आया। उनकी संगति से ही वह रात के बीच कुरान का ज्ञान लाया और शरीयत का धर्म चलाया।

एक जबराईल फरिस्ता, और महंमद पैगंमर।
राह देखाई मोमिनों, अर्स चढ़ उतर।। १४ ।।

जबराईल फरिश्ते ने और दूसरे रसूल साहब ने मोमिनों को परमधाम से आने-जाने का रास्ता बताया।

जबराईल नूर मकान लग, आगूं न सक्या चल।
ना तो ल्यावने वाला मुसाफका, कहे आगूं जाऊं तो जाए पर जल।। १५ ।।

जबराईल फरिश्ता की हद अक्षरधाम तक है। वह आगे नहीं चल सका। वरना मुहम्मद साहब की संगति से कुरान जैसा महान ज्ञान लाने वाला फरिश्ता कहता है कि आगे जाऊंगा तो मेरे पर जल जाएंगे।

जबराईल जबरूत से, याकी असल नूर मकान।
सोहोबत करी महंमद की, तो ल्याया हक फुरमान।। १६ ।।

जबराईल फरिश्ता की असल रूह अक्षरधाम में रहती है। यह तो मुहम्मद साहब की संगति से ही श्री राजजी महाराज का आदेश (कुरान) को लाया।

जो रूह अर्स महंमद की, तिनको न सक्या पेहेचान।
तो न आया बड़े नूर में, छोड़्या न नूर मकान।। १७ ।।

यह जबराईल फरिश्ता मुहम्मद साहब की पहचान नहीं कर सका कि यह परमधाम के हैं, इसलिए अक्षरधाम को छोड़कर परमधाम नहीं जा सका।

चल न सक्या जबराईल, रह्या हद जबरूत।
मासूक कह्या महमंद को, तो पोहोंच्या बका हाहूत।। १८ ।।

जबराईल फरिश्ता अक्षरधाम तक ही रह गया। आगे नहीं चल सका। श्री राजजी महाराज ने मुहम्मद को माशूक कहा है, इसलिए मुहम्मद साहब मूल-मिलावे में पहुंच गए।

सो ए वतन रूह मोमिनों, जित पोहोंच्या न जबराईल।
एक महंमद संग आखिरी, बीच पोहोंच्या असराफील।। १९ ।।

यह मोमिनों का वही अखण्ड घर है जहां जबराईल फरिश्ता नहीं जा सकता। मुहम्मद साहब के साथ में इनके स्वरूप की पहचान कर एक असराफील फरिश्ता ही परमधाम गया।

Nijanand App

इत और न कोई पोहोंचिया, ए हक हादी मोमिनों वतन।
तो असराफील आइया, करने बका सबन।। २० ।।

परमधाम श्री राजश्यामाजी और रूहों का अखण्ड घर है जहां आज दिन तक कोई नहीं पहुंचा। अब श्री प्राणनाथजी ने दुनियां को अखण्ड करना था तो असराफील फरिश्ता परमधाम के अन्दर आ सका।

महंमद सिफायत सब को, कुल्ल सैयन महंमद नूर।
सो बिन फरिस्ते क्यों होवहीं, तो लिया बीच रूह हजूर।। २१ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के ही अंग सब मोमिन हैं, इसलिए उन की मेहर सभी के ऊपर है। श्री राजजी महाराज ने रूहों के बीच जागृत ज्ञान देने के लिए ही असराफील फरिश्ते को अन्दर बुलाया। बिना इश्क के यह सम्भव कैसे होता?

तो अव्वल आखिर महंमद, महंमद सब अवसर।
सब नूर इनका कह्या, कोई बखत न इन बिगर।। २२ ।।

मुहम्मद के वास्ते ही सब संसार बना, इसलिए मुहम्मद की सभी समय (अव्वल, बीच और आखिर) की लीला है। सब इन्हीं के नूर से ही हैं। पूरा परमधाम और संसार का खेल सब मुहम्मद के नूर से ही है। कोई वक्त, कोई भी चीज इनके बगैर नहीं है।

साथ महंमद मेंहेंदी असराफील, ले मगज मुसाफी बल।
तो आया बीच अर्स अजीम के, पोहोंच्या बीच बड़े नूर असल।। २३ ।।

रसूल साहब के साथ असराफील फरिश्ता परमधाम के अन्दर गया। हकीकत और मारफत का ज्ञान लेकर मुहम्मद साहब के साथ इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर आया।

ना तो असराफील है नूर का, क्यों फरिस्ता सके आगे आए।
पर मगज मुसाफी नूरमें, रूह महंमद लिया मिलाए।। २४ ।।

वरना असराफील फरिश्ता भी अक्षरधाम का है वह भी परमधाम के अन्दर नहीं आ सकता था, पर मुहम्मद साहब के अन्दर बैठकर रंग महल के अन्दर जाकर हकीकत और मारफत का ज्ञान लिया।

ए नूरी तीनों फरिस्ते, इनों की असल एक।
ए किया महंमद मोमिनों वास्ते, हक इलमें पाइए विवेक।। २५ ।।

असराफील, जबराईल और अजाजील तीनों की परआतम एक ही ठिकाने की है। श्री श्यामाजी महारानी और मोमिनों की लीला के वास्ते ही यह अलग-अलग हुए। जिसकी जानकारी जागृत बुद्धि के ज्ञान से मिलती है।

कह्या सिजदा कर आदम पर, जो सब के अव्वल आदम।
अजाजीलें देख्या आपको, तो न पकड़े रसूल कदम।। २६ ।।

खुदा ने अजाजील को आदेश दिया कि संसार के पहले आदमी आदम (आदि नारायण) पर सिजदा करो। अजाजील ने अपनी शक्ति को देखा कि मैं संसार का मालिक हूं। इस अहंकार में आकर आदि नारायण पर सिजदा न करने पर लानत लगने से सब इन्सानों के दिल और आंख में बैठा है, इसलिए सारी दुनियां ने (मोमिनों के सिवाय) श्री प्राणनाथजी के संसारी वजूद को देखा और पहचान नहीं की।

Nijanand App

हकें आप पढ़ाइया, अंगुली से आदम को।
दे इलम नाम पढ़ाए, सक न सुभे इनमों।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज ने स्वयं उंगली के इशारे मात्र से आदम को ज्ञान दिया। अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर सब संसार की हकीकत बताई। इसमें जरा भी शक और संशय नहीं है।

हुकम हुआ आदम को, कहे फरिस्तों आगे नाम।
करें तुझ पर सिजदा हैयाती, मिलकर सब तमाम।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज ने इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को हुकम किया कि सब मोमिनों और ईश्वरी सृष्टि के आगे अपनी पहचान करा दो। यह सभी मिलकर तुम्हारे ऊपर ईमान लाएंगे और सिजदा बजाएंगे।

सो पढ़े कहें नाम आदमें, जाहेर किए सब पर।
तब फरिस्तों किए सिजदे, एक अबलीस बिगर।। २९ ।।

दुनियां के पढ़े-लिखे लोग कहते हैं कि आदि आदम ने यह सब बातें दुनियां में जाहिर कर दीं और तब सब फरिश्तों ने आदम पर सिजदा बजाया, परन्तु एक शैतान अबलीस ने नहीं बजाया, अर्थात् श्री प्राणनाथजी के ऊपर ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि ईमान ले आई, परन्तु जिनके दिलों पर अबलीस शैतान बैठा है, वह ईमान नहीं लाई।

जो किए होते एते सिजदे, ऊपर उस आदम।
जाको हक करें एता बड़ा, सो क्यों रद करे हुकम।। ३० ।।

कहते हैं कि अजाजील ने खुदा के ऊपर बहुत सिजदे बजाए थे। फिर जिस आदम के ऊपर सिजदा बजाने के लिए खुदा हुकम करें और अजाजील, इतने बड़े फरिश्ते ने कैसे इन्कार कर दिया।

हैयात हुए के होसी आखिर, जो हुए नाम जाहेर सब पर।
तो बूझ हैयाती दुनियां, ए सरे से छिपी रही क्यों कर।। ३१ ।।

जो लोग अखण्ड हो गए उनके नाम दुनियां में जाहिर हैं और कुछ लोग आखिरत में अखण्ड होंगे। यह बात सबने समझ ली, मगर दुनियां कब अखण्ड होगी, शरा के काजियों से यह कैसे छिपा रह गया?

ए किस्से आखिरत के, पढ़े डारें गुजरों में।
काम कयामत का रोसन, होसी इन किस्सों से।। ३२ ।।

यह कुरान की सब बातें आखिर में अभी होने वाली हैं। दुनियां के विद्वान कहते हैं कि कुरान की यह बातें हो गई हैं। श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान के किस्सों से ही कयामत की जानकारी मिलेगी।

जो हक के सब फरिस्ते, किया सिजदा आदम पर।
तो अबलों तिन हुकम से, सरा होत नहीं मुनकर।। ३३ ।।

यदि श्री राजजी महाराज के सभी मोमिनों और ईश्वरीसृष्टि ने इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज के स्वरूप की पहचान कर सिजदा किया होता तो शरीयत के मानने वाले इमाम मेंहेंदी के जाहिर होने से मुनकर कैसे होते?

Nijanand App

कहूं हकीकत फरिस्तों, मोमिनों करो पेहेचान।
तबक चौदे फरिस्ते, तिल जेता न खाली मकान।। ३४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं सब देवी-देवताओं की हकीकत बताती हूं। हे मोमिनो! तुम इन्हें पहचान कर देखो। चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में एक तिलभर जगह खाली नहीं है, जहां अजाजील और उसके देवी-देवता न हों।

जेता कोई फरिस्ता, बीच हैवान या इनसान।
बिना फरिस्ते जरा नहीं, बीच जिमी या आसमान।। ३५ ।।

जानवरों में या इन्सानों में, जमीन और आसमान में और देवी-देवताओं में जितने भी फरिश्ते हैं, इन सबके अन्दर अजाजील का ही जीव बैठा है।

एक छोटी बड़ी बूंद पानी की, सो भी फरिस्ता सब ल्यावत।
या जड़ों दरखतों फरिस्ते, या पर पेट पांउं चलत।। ३६ ।।

पानी की छोटी-बड़ी बूंद का लाने वाला भी यही अजाजील फरिश्ता है। संसार के जड़ वृक्ष या पेट से चलने वाले सांप या पांव से चलने वाले जानवरों में अजाजील (विष्णु भगवान) समाया है।

देखो सहूर कर मोमिनों, हक के सब फरिस्ते।
ए बखत करसी आखिर, किन नबी पर किए सबों सिजदे।। ३७ ।।

हे मोमिनो! तुम अब विचार कर देखो कि श्री राजजी महाराज के इन सब फरिश्तों में से किस किसने इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के चरणों में प्रणाम किया। यह बातें आखिर में जाहिर होंगी।

पेहेचानो अजाजील को, सिजदा न किया आदम पर।
दूर हुआ ले लानत, सो सबों लगी क्योंकर।। ३८ ।।

अब अजाजील को पहचानो, जिसने आदम पर सिजदा नहीं किया था और उसे लानत लगी थी। वही दुनियां वालों को क्यों लगी?

फरिस्तों अजाजील सिरदार, अबलीस जिनों वकील।
पोहोंचाया सबों सय दिलों, पलक न करी ढील।। ३९ ।।

इस सब दुनियां में अजाजील (विष्णु भगवान) ही सबका परमात्मा है, जिसका अबलीस शैतान (नारद) ही वकील है, इसलिए उसने एक पल भर की देरी भी न करते हुए सब मानवों के दिलों में कुफ्र भर दिया।

ना किया अजाजीलें सिजदा, तो सब रहे सिजदे बिन।
सब दुनियां ताबे तिन के, ताथें किया न सिजदा किन।। ४० ।।

आदम के ऊपर जब अजाजील ने सिजदा नहीं किया तो बाकी दुनियां वाले भी सिजदा नहीं कर सके, क्योंकि दुनियां सब अजाजील के अधीन है, इसलिए किसी ने सिजदा नहीं किया।

तो लानत हुई तिन को, वजूद देख गया भूल।
देख्या न तरफ रूह की, वह तो हक का नूरी रसूल।। ४१ ।।

जैसे अजाजील आदम के तन देखकर भूल गया, इसी तरह श्री प्राणनाथजी के स्वरूप को देखकर संसार की सारी दुनियां भूल गई और पहचान नहीं कर सकी, क्योंकि श्री राजजी महाराज के नूरी अंग रसूल साहब हैं।

Nijanand App

हकें आदम कह्या रसूल को, वह तो अबलीसें किया ख्वार।
गेहूं खिलाए काढ़या भिस्त से, करके गुन्हेगार।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज ने बाबा आदम को ही पैगम्बर कहा है, जिसको कुरान के किस्से के अनुसार अबलीस ने गेहूं खिलाकर गुनहगार बनाया और बहिश्त से बाहर निकलवाया।

हिरस हवा मोर सांप जिद, साथ निकस्या अबलीस ले।
क्यों हकें इन आदम पर, नूरी पे कराए सिजदे।। ४३ ।।

यह शैतान अबलीस मोर और सांप के झगड़े में हौवा को गेहूं खिलाकर गुनहगार बनाकर बहिश्त से बाहर निकाल लाया। ऐसे गुनहगार आदम के ऊपर सिजदा बजाने के लिए नूरी फरिश्ते अजाजील को क्यों आदेश देते?

जिन सब जिमी पर सिजदे, किए हक पर बेसुमार।
उन आदम के वास्ते, क्या हक नूरी को देवें डार।। ४४ ।।

जिस अजाजील फरिश्ते ने खुदा के ऊपर पूरी जमीन पर बेशुमार सिजदे बजाए हैं तो उस गुनहगार आदम के वास्ते खुदा अजाजील को क्यों लानत देते?

एता देखाया जाहेर कर, दई नूरी को लानत।
दुनी तो न खोले आंख दिल, जो असल पैदा जुलमत।। ४५ ।।

यह बातें साफ कुरान में लिखी हैं कि नूरी फरिश्ते को लानत है। दुनियां जो निराकार से पैदा है वह अपने दिल की आंखें खोलकर इस बात को नहीं समझती।

जो लों ले ऊपर के माएने, दुनी छूटे न उपली नजर।
तो भी न लेवें बातून, जो यों लिख्या जाहेर कर।। ४६ ।।

जब तक ऊपर के मायने देखेंगे, तब तक माया की दृष्टि नहीं छूटेगी। ऐसा साफ लिखा होने पर भी बातूनी अर्थ नहीं लेते।

तो कह्या मजाजी दिल को, गोस्त का टुकड़ा।
तिन दिलों पातसाह दुस्मन, और दिल तो कह्या मुरदा।। ४७ ।।

इसलिए दुनियां वालों का दिल मजाजी, अर्थात् गोश्त का टुकड़ा कहा है। जिनके दिलों में बादशाही अबलीस की है, इसलिए दुनियां वालों को मुर्दा दिल कहा है।

कही लानत अजाजील को, सो लगी सब दुनियां को।
एती फरिस्ते की पाक बंदगी, क्यों दुनी मारी जाए इनसों।। ४८ ।।

अजाजील की लानत इसलिए सारी दुनियां को लग गई वरना अजाजील फरिश्ता जिसने इतने सिजदे बजाए हों, उसके कारण दुनियां को नुकसान नहीं होना चाहिए था।

गुनाह एक अबलीस के, क्यों सब दुनी मारी जाए।
पाक सरा हक अदल, सो ऐसे क्यों फुरमाए।। ४९ ।।

गुनाह तो एक अबलीस ने किया तो सब दुनियां को सजा क्यों मिले? खुदा की सच्ची अदालत में ऐसा न्याय क्यों हुआ?

Nijanand App

पाक फरिस्ते पाक सिजदे, बेसुमार किए हक पर।
तिन बदले दुनी को दोजख, क्यों देवें कादर।।५०।।

अजाजील फरिश्ता पाक (साफ) था। उसके बेशुमार सिजदे जो उसने खुदा पर किए, पाक थे। उसके बदले में खुदा जो समर्थ हैं, दुनियां को दोजख की अग्नि में क्यों डालेंगे?

जो न लेवें हकीकत, नजर खोल बातन।
तो लों अंधेरी ना मिटे, दिल होए नहीं रोसन।।५१।।

जब तक बातूनी नजर को खोलकर हकीकत के ज्ञान को नहीं समझेंगे, तब तक अज्ञानता की अंधेरी नहीं मिटेगी और ज्ञान नहीं आएगा।

ए कलाम नजूम और बातून, माहें हक हकीकत।
हक इलमें खोले रूह नजर, तब दिन ऊगे बका मारफत।।५२।।

इन वचनों में श्री राजजी महाराज की हकीकत के बातूनी रहस्य छिपे हैं। जब श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से रूह की नजर खुल जाए तब समझो अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हो गया।

ए तीनों फरिस्ते नूर से, हुए पैदा तीनों तालब।
जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तिन तैसा पाया मरातब।।५३।।

यह असराफील, जबराईल और अजाजील अक्षर से हैं। वह रूहों के खेल देखने की चाहना के कारण ही संसार में आए। इन तीनों ने आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के स्वरूप को जिसने जिस रूप में पहचाना, उसे वैसा ही फल मिला।

जिन जैसी करी दोस्ती, तिन तैसी पाई बकसीस।
दूर नजीक या अन्दर, देखो माएने आयत हदीस।।५४।।

इन तीनों में से जिसने जिस तरह से श्री प्राणनाथजी से दोस्ती की, उनको वैसी ही बख्शीश मिली। अजाजील को दूर किया। जबराईल को नजदीक किया। असराफील को अन्दर बिठा लिया। कुरान की आयतों और हदीसों के मायनों को समझो।

बंदगी का फल मांगिया, नूरी फरिस्ते हक पे।
तिन बदले दुनी सब दोजख, क्यों डारी जाए आगमें।।५५।।

नूरी फरिश्ता अजाजील ने श्री राजजी महाराज से अपनी बन्दगी का फल मांगा कि आदम की औलाद के दिलों पर मेरी बादशाही कर दें, तो फिर उसके बदले में दुनियां को दोजख की अग्नि में क्यों जलाया जाए?

ए इन्साफ सरा ना करे, दुरस्त माएने बातन।
उपले माएने ले आप सिर, सिफत जो मोमिन।।५६।।

बातून के हकीकी मायनों में ऐसा इन्साफ शरीयत नहीं करती। दुनियां वाले मोमिनों की सिफत को ऊपरी मायनों से अपने सिर पर लिए बैठे हैं।

ना तो अजाजील भी नूर से, दे गुमाने डारया दूर।
एक रह्या दरम्यान में, एक माहें आया हजूर।।५७।।

वरना अजाजील फरिश्ता भी अक्षर का फरिश्ता है, जिसे अहंकार के कारण दूर फेंक दिया गया। एक जबराईल फरिश्ता बीच में रहा और एक मूल-मिलावे में असराफील श्री राजजी के सामने पहुंच गया।

Nijanand App

हकें महंमद मोमिनों वास्ते, कई मेहेर कर खेल देखाए।
एक दूर किए इनों वास्ते, एक नजीक लिए बोलाए।।५८ ।।

श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी और मोमिनों को मेहर करके यह खेल दिखाया। इनके वास्ते ही एक फरिश्ते अजाजील को दूर भेजा और असराफील फरिश्ते को अपने पास बुला लिया।

मोमिनों की सरीयत में, आया मैकाईल बुध बल।
पीछे बीच हकीकत, आया जबराईल सामिल।।५९ ।।

मोमिनों की शरीयत में संसार की बुद्धि का फरिश्ता ब्रह्मा आया और हकीकत का ज्ञान लेकर जबराईल फरिश्ता भी साथ में चल पड़ा।

आखिर आए असराफीलें, खोले मुसाफ मारफत द्वार।
दिन बका किया जाहेर, खोले अर्स अजीम नूर पार।।६० ।।

आखिर में असराफील ने आकर कुरान के मारफत के ज्ञान के दरवाजे खोल दिए। अक्षर के पार अखण्ड परमधाम को संसार में जाहिर कर दिया।

महामत कहे ए मोमिनों, कही हकीकत फरिस्तों।
अब कहूं कजा और फितना, जो उठया बरारब मों।।६१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने यह फरिश्तों की हकीकत बताई है। अब न्याय की और झगड़े की हकीकत बताती हूं जो बरारब में उठी।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ४२८ ।।

बाब कजाका

जैसा अमल रात का, चाहिए ज्यों चलाया।
बीच सरे जबराईलें, किया हक का फुरमाया।।१ ।।

अज्ञान के अंधेरे में श्री राजजी महाराज के फुरमान के अनुसार जबराईल फरिश्ते ने शरीयत का शासन चलाया।

रसूलें सरा रात का, चलाया हक अदल।
जब रसूल जबराईल ले चले, तब क्यों चले अदल अमल।।२ ।।

अज्ञान के अंधेरे में श्री राजजी महाराज का सच्चा न्याय रसूल साहब ने चलाया। जब रसूल साहब और जबराईल चले गए, तो फिर सच्चा न्याय कैसे चले?

कजा कही तीन सकस की, एक भिस्ती दोए दोजख।
भिस्ती हक को चीन्ह के, अदल कजा करी हक।।३ ।।

कुरान में तीन लोगों के न्याय का वर्णन है। जिनमें एक को बहिश्त मिली, दो को दोजख की अग्नि में जलना पड़ा। जिनको बहिश्त मिली, उन्होंने खुदा की पहचान कर ली। यही खुदा को न्याय करना था।

कही कजा दूजे सकस की, हक से करी चिन्हार।
पर अदल कजा तो भी ना हुई, तो लिख्या बीच नार।।४ ।।

दूसरे आदमी ने भी खुदा की पहचान तो की, परन्तु सच्चा न्याय नहीं दे सका। ऐसा किताब में लिखा है।

Nijanand App